पेरिस
मई ३१, २००८

संदेश संख्या – १४६

निन्दा–निष्ठुरता
आलोचना–करुणा

उपर्युक्त संस्कृत शब्दों का अंग्रेजी भाषा में सटीक पर्यायवाची शब्द खोजना आसान नहीं है । फिर भी, सर्वाधिक सटीक अनुवाद शायद निम्नलिखित होगा–

निन्दा–निष्ठुरता : Condemnation - Cruetty
आलोचना–करुणा : Criticism - Compassion

यह अनुवाद सटीक नहीं है किन्तु कुछ हद तक अर्थ निकलता है । उदाहरणार्थ, 'आलोचना' शब्द 'लोचन' से बना है जिसका अर्थ है – आँख । अतः 'आलोचना', द्रष्टा–रहित दर्शन की क्षमता को इंगित करता है, अर्थात् पूर्वाग्रहों का दबाव जो कि विभेदकारी 'द्रष्टा' का अहंकार है, से दूषित हुए बिना 'जो है' को देख पाने की क्षमता । पूर्ण दर्शन की ऐसी प्रक्रिया केवल करुणा से ही सम्भव है न कि अहंकार या 'मैं' के दंभ से ।

इस तरह 'आलोचना' और 'करुणा' संस्कृत में सहचर शब्द है । लेकिन अंग्रेजी में, Criticism का अर्थ है निष्ठुरता, शत्रुता, प्रतिशोध, ईर्ष्या और ये सभी अहंकार से उत्पन्न होते हैं । किन्तु Criticism अहंकार एवं क्रूरता से बिल्कुल मुक्त भी हो सकता है । शल्यचिकित्सक के चाकू की तरह यह करुणा भी हो सकती है । जो लोग रिट्रीटों में पूर्णता के साथ नहीं सुनते, वे निष्कष निकाल लेते हैं कि दूसरे 'गुरुओं' की Criticism हो रही है । वे शायद इसका अर्थ निन्दा मानते हैं जिसे अंग्रेजी में Condemnation कहा जाता है । यह निन्दा वस्तुतः निष्ठुरता ही है अर्थात् क्रूरता, दंभ या प्रतिशोध है जो कि आत्मकेन्द्रित गतिविधियाँ हैं।

क्या यह समझना सम्भव है कि शिवेन्दु 'आलोचना' तो कर सकता है, किन्तु निन्दा कभी नहीं ? अर्थात् वह चीजें जैसी हैं वैसी बता सकता है । किन्तु ईर्ष्या या शत्रुतावश वह किसी की भी निन्दा नहीं करता । रिट्रीटों में तो केवल करुणा प्रवाहित होती है । निर्मन की अवस्था में इस ज्वाला के प्रति उपलब्ध मात्र रहें ।

विभेदकारी मन विभिन्न प्रकार के समूहों या संगठनों की सीमाओं में ही सुरक्षा खोजता है, जैसे कि भाषा समूह, धार्मिक समूह, आध्यात्मिक समूह, जाति समूह, सांस्कृतिक समूह, खेल–कूद समूह, प्रजाति समूह, ग्रीय समूह, पंथ एवं सम्प्रदाय समूह, पेशागत समूह, व्यवसाय समूह, आर्थिक समूह, स्वामियों का समूह, कामगारों का समूह, सामाजिक समूह, राजनीतिक समूह आदि–आदि । प्रत्येक समूह स्वयं में विशिष्ट होने के अभिमान को तथा अपने निहित–स्वार्थ को अविवेकी रूप से बढ़ाते रहते हैं । उनमें से कुछ तकनीकी या कानूनी रूप से सही माने जा सकते हैं किन्तु ज्यादातर सुरक्षा के लिए खतरा हैं क्योंकि ये समूह अपनी–अपनी अहमन्यता के कारण शत्रुता और विद्वेष को ही बढ़ाते हैं । जब अर्थशास्त्रीगण अपने विकास संबंधी सूचकों के आधार पर प्रसन्न होते हैं तो उस पर राजनीति करने वाले भी खुशी मनाना प्रारम्भ करते हैं किन्तु तब एक विचित्र घटना घटित होती है । धनी और अधिक धनी तथा अत्यधिक धनी हो जाते हैं और गरीबों की गरीबी कंगाली में बदलने लगती है ।

वास्तविक सुरक्षा तो मनुष्य के उसकी असीम सम्भावनाओं में प्रस्फुटन में है । केवल यही इस पृथ्वी को बचाकर सुरक्षित रख सकता है और इसे नाभिकीय विध्वंस से बचा सकता है । किन्तु सुरक्षा चाहने वाला घटिया एवं क्षुद्र मन उस नाभिकीय विध्वंस की ओर तेजी से बढ़ रहा है ।

।। जय असीम, अज्ञेय, अनाम ।।